RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 21 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 27 अक्टूबर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

कब होगी सुनवाई? पूछता सीमांत

मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष धर्मशक्तू का निमंत्रण

समिति की आमसभा में अधिकारीगण आकर समस्याओं का समाधान कर दें

शिक्षा, चिकित्सा, संचार, सड़क, खाद्यान्न सहित तमाम मुद्दे

कार्यालय प्रतिनिधि

जोहार। उच्चहिमालय क्षेत्र से नीचे घाटी की ओर बकरवाल लोग अपने भेड़ बकरियों के साथ आना प्रारम्भ हो चुके हैं। कितने विकट रास्ते को पार करते हुए और यह लोग जैसे-तैसे घाटियों पर उतर रहे हैं। सीमान्त के ऐसे दुर्गम रास्तों से होकर जाने वालों की बात समझते हुए केन्द्र सरकार ने तक विशेष ग्रामों का दर्जा देते हुए कुछ उम्मीद जताई थी लेकिन हालात जस के तस हैं। सीमान्त के इन ग्रामों की सुनवाई कब होगी? पूरा सीमान्त क्षेत्र सवाल कर रहा है। बिजली, पानी, संचार, स्वास्थ्य सहित सभी मूलभूत जरूरतों के लिये बार-बार कहा जा रहा है लेकिन कागजों पर घोड़े दौड़ाने के अलावा मौके पर क्या हो रहा है?

इन्हीं सब बातों को लेकर मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने बराबर अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ पत्राचार किया है और अब जबकि हरि प्रदर्शनी के दौरान समिति की वार्षिक आमसभा होने वाली है, सभी को आने का निमंत्रण दिया है। श्री धर्मशक्तू ने कहा है कि सभी विभागों के अधिकारी मल्ला दुम्मर में आकर वार्षिक अधिवेशन में आकर आम जनता की समस्याओं का निवारण कर दें। इन दिनों में उच्चहिमालय क्षेत्र से जो परिवार नीचे उतर आएं हैं वह अपनी समस्याओं के साथ ही व्यवहारिक बातें बताएंगे। इस बीच उपजिलाधिकारी मुनस्यारी की ओर से मल्ला जोहार के 14 राजस्व गाँवों की मूलभूत समस्याओं के सम्बन्ध में तहसीलदार, खण्ड विकास अधिकारी, अवर अभियन्ता लोनिवि, कमान अधिकारी ग्रिफ, जल संस्थान, सहा. पूर्ति निरीक्षक सहित तमाम जगह पत्र भेजते हुए हरि प्रदर्शनी के दौरान भागीदारी को कहा है। साथ ही विभागों से सम्बन्धित स्टाल लगाने के निर्देश भी दिए हैं। उपजिलाधिकारी ने सभी से मल्ला जोहार की आम सभा में सीमान्त क्षेत्र के 14 राजस्व ग्रामों की मूलभूत समस्याओं

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

संसार, शरीर और मृत्यु को जीतने वाले

सूर्यकान्त बाली

अष्टावक्र का नाम हममें से किसी के लिए नया नहीं। शरीर में अष्ट यानी आठ जगहों पर वक्र यानी टेढ़ा होने के कारण इस महान दार्शनिक का नाम पड़ गया था अष्टावक्र। जरूर उन्हें अपने वाल्यकाल में ही पोलियो जैसी कोई बीमारी हो गई होगी जिसका इलाज नहीं हो पाया होगा और उनका शरीर आजीवन टेढ़ा-मेड़ा रहा। उनके इस तरह के शरीर को लेकर एक रोचक कहानी महाभारत के वनपर्व (अध्याय 132, श्लोक 10-12) में है। अष्टावक्र के पिता कहोल अपने समय के भारी विद्वान थे जिन्होंने जनक की ब्रह्मसभा में मुनि यज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ किया था। इन्हीं कहोल को उद्दालक की पुत्री और श्वेतकेतु की बहन जुजाता ब्याही गई थी। कहानी यह है कि जब अष्टावक्र अभी माँ सुजाता के गर्भ में ही थे तो एक बार उन्होंने अपने पिता का इस बात के लिए खूब मजाक उड़ाया कि वे हर वक्त वेदों का अध्ययन करते रहते हैं। मजाक से अपमानित अनुभव करने वाले पिता ने अपनी सन्तान को उसी गर्भावस्था में शाप दे दिया कि तू माँ के पेट में रहकर भी ऐसी बातें बोल रहा है, जा तू आठ जगहों से टेढ़ा हो जाएगा।

कहानी अविश्वसनीय जैसी लगती है। कोई पिता अपनी सन्तान को उसके गर्भावस्था में ही ऐसा भयंकर शाप क्यों दे देगा? कैसे भला कोई गर्भ में ही इस तरह बोलना शुरू कर सकता है? पर इस कथा से इतना तो अनुमान लग ही जाता है कि शरीर जन्म से ही टेढ़ा था। उनके टेढ़ेपन को लेकर ऐसी कई कहानियाँ हमारे ग्रन्थों और लोककथाओं में फैली हुई हैं। मसलन महाभारत के ही अनुशासन पर्व (अध्याय 19-21) में एक कहानी अष्टावक्र के विवाह को लेकर है जो लगभग अविश्वसनीय जैसी है।

उद्दालक के ही समकालीन एक ऋषि हुए थे- वदान्य। इनकी सुप्रभा नाम की सुन्दर कन्या से विवाह करने की इच्छा अष्टावक्र ने जब प्रकट की तो वदान्य ने एक शर्त बाँध दी। अजीब सी शर्त, कि पहले उत्तर दिशा की एक यात्रा करके आओ, वहाँ एक वृद्ध स्त्री तपस्या कर रही है जिससे आशीर्वाद पा लेने के बाद ही वह सुप्रभा से विवाह कर पाएगा। शर्त का मतलब साफ है। शरीर में आठ जगहों से टेढ़े अष्टावक्र से भला उत्तर की यानी हिमालय पर्वत की यात्रा कहाँ से हो पाएगी। न शर्त पूरी हो पाएगी और न सुप्रभा एक कुरूप व्यक्ति से शादी करने को बाध्य होगी। पर कहानी यह है कि अष्टावक्र ने शर्त पूरी कर दी और अन्तत: सुप्रभा से इस विशिष्ट दार्शनिक युवा का विवाह हो गया।

पर जो अष्टावक्र - कथा लोगों के बीच किवदंतियों के रूप में प्रचलित है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है और इस बात का प्रतीक है कि कैसे महाभारत युग के बाद के दार्शनिक युग का एक महापुरुष लोक कथाओं का नायक बन गया। कहानी यह है कि अष्टावक्र एक बार मिथिला में महाराज जनक की राजसभा में गए। हम जान चुके हैं कि परीक्षित के पुत्र जनमेजय के समय ही जनकवंश के एक राजा महावशी जनक मिथिला में वैसे ही अध्यात्म जगत के नायक बने हुए थे जैसे कुरु पंचाल देश में मुनि यज्ञवल्क्य ने अपनी दार्शनिक उद्भावनाओं के कारण धूम मचा रखी थी। अब पता नहीं अष्टावक्र इन्हीं महावशी जनक की राजसभा में गए थे या उनके किसी वंशज जनक की राजसभा में। पर महाभारत के वनपर्व (अध्याय 133) से पता चलता है कि अष्टावक्र अपने मामा (यानी उद्दालक के पुत्र और सुजाता के भाई) श्वेतकेतु के साथ एक बार जनक की राजसभा में गए थे। अब इसके बाद लोककथा यह कहती है कि जैसे ही अष्टावक्र जनक के दरबार में पहुँचे तो वहाँ बैठे सभासद उनके टेढ़े मेढ़े शरीर को देखकर हँस पड़े। इसके बावजूद बिना छोटा अनुभव किए और बिना आत्मविश्वास खोए अष्टावक्र ने तपाक से उन सभासदों को झाड़ते हुए कहा कि आप लोग किस पर हँस रहे हैं? शरीर पर, जो विनाशशील है? उस शरीर के पीछे छिपे बैठे उस विचार को और सत्य को पहचानने की कोशिश करो जो कभी नष्ट नहीं होता और जो वास्तव में परमतत्व है। डाँट का असर पड़ा, सभासदों ने अपनी गलती महसूस और कबूल की और फिर अष्टावक्र का वहाँ अध्यात्म सम्वाद हुआ।

इसी कहानी का सूत्र पकड़कर हम महाभारत युद्ध के तत्काल बाद देश में विकसित हुए एक नए किस्म के दार्शनिक चिन्तन पर अपने को केन्द्रित करना चाहते हैं। अष्टावक्र की हर कहानी, चाहे वह उनके जन्म की हो, सुप्रभा से विवाह की हो या फिर जनक की राजसभा से जुड़ी हो, हमारे सामने एक विचार रखती है कि शरीर का कोई महत्व नहीं। वह सुन्दर है तो भी ठीक है, सुन्दर नहीं है तो भी ठीक है। सीधा है तो भी ठीक है, टेढ़ा है तो भी ठीक है। महत्व उस आत्मतत्व का है जो शरीर से परे है, शरीर से ऊपर है, विनाश से ऊपर है, जो सदा रहने वाला है और परमतत्व है।

इसी को हम जरा उस थीम से जोड़कर

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

क्या जन आन्दोलन ही एकमात्र रास्ता बचा है अब

स्वास्थ्य सेवाओं से बेहाल चौखुटिया में विशाल जन प्रदर्शन ने सरकार को जिस प्रकार से चेताया है, वह बता रहा है कि जनता जब अपने में उतर आती है तब वह भूल जाती है कि कौन चेहरा कुर्सी में बैठा है। इसलिए जन भावनाओं का आदर जनप्रतिनिधियों ने हमेशा करना चाहिये। जनता के विशाल आन्दोलन के बाद मुख्यमंत्री ने संज्ञान लेते हुए स्वास्थ्य सचिव को तलब करते हुए समयबद्ध तरीके से कार्रवाई के निर्देश दिए।

प्रदेशभर में जगह-जगह तमाम तरह के आन्दोलनों की बाढ़ है लेकिन चौखुटिया में स्वास्थ्य मामलों को लेकर इतना जबर्दस्त सैलाब उमड़ेगा किसी ने कल्पना नहीं की थी। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर पहाड़वासी कितने परेशान हैं। ब्लाक के 95 ग्राम पंचायतों के लोग ढोल-नगाड़े और देव ध्वजाएँ लेकर आन्दोलन करने लगे थे। कहा कि राज्य निर्माण के 25 साल बाद बाद भी सरकार लोगों को अहम सुविधा नहीं दे पा रही है। लोगों को मजबूरन अपनी मूलभूत मांगों के लिए सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। इसके बाद शासन ने चौखुटिया के सीएचसी को उप जिला चिकित्सालय का दर्जा देने की स्वीकृति दे दी। स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर हुए इस आन्दोलन के अलावा उत्तराखण्ड में लगातार आन्दोलन होने का सीधा सा मतलब तो यही निकल रहा है कि सुविधाओं के लिये जन आन्दोलन ही एकमात्र रास्ता बचा है। जन भावनाओं को देखते हुए पर्वतीय राज्य की स्थापना हुई थी लेकिन जब से राज्य बना सिवाय कुर्सी के लिये नेताओं की चैनदारी ज्यादा दिखाई दे रही है। प्रधान से लेकर शीर्ष पद तक अपनी चैन बनाने के लिये जिस प्रकार की राजनीति प्रदेश में चल रही है उसने जन भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया है। नेताओं ने बता दिया है कि उनकी प्रतिबद्धता किसी भी तरह अपनी कुर्सी पाना है। ऐसे में आन्दोलित प्रदेश को सदमार्ग पर लाने वाले जरूरी हैं।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

चेक की चोरी में 8 भारतीय गिरफ्तार

ओटावा। कनाडा की पुलिस ने डाक के जरिए मिलने वाले क्रेडिट कार्ड और चेक की चोरी के मामले में भारतीय मूल के आठ लोगों को गिरफ्तार किया है और उन पर 300 से अधिक आरोप लगाए हैं। पुलिस जांच में पता चला है कि कुछ लोग मिलकर आवासीय मेलबॉक्स को निशाना बना रहे थे।

मोकिर, एगियन, हॉविट को नोबेल

स्टॉकहोम। नवाचार पर आधारित आर्थिक विकास की व्याख्या के लिए जोएल मोकिर, फिटिप एगियन और पीटर हॉविट को इस साल का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई। मोकिर नॉर्थवेस्टर्न से, एगियन कॉलेज डी.फ्रांस तथा हॉविट ब्राउन यूनिवर्सिटी से हैं।

नार्वे दूतावास पर ताला लगाया

काराकस। देश की विपक्षी नेता मारिया कोरिना माचादो को 2025 का नोबेल शान्ति पुरस्कार देने से नाराज वेनेजुएला सरकार ने नार्वे के दूतावास पर ताला लगा दिया है। वेनेजुला में नाबेल समिति के फैसले की हो रही कड़ी आलोचना का ज्वार थम नहीं रहा है। कहा जा रहा है कि माचादो देश में सत्ता पलटने के लिए विदेशी सैन्य हस्तक्षेप की मांग करती रही है।

वीजा आवेदकों के लिए कठिन परीक्षा

लन्दन। ब्रिटेन की सरकार ने भारत सहित दूसरे देशों के वीजा आवेदकों के लिए अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा को और कठिन बनाने की शर्तें पेश की। ब्रिटेन में बढ़ते आव्रजन पर बड़ी कार्रवाई के तहत संसद में यह प्रस्ताव रखा गया। ब्रिटेन का गृह विभाग अंग्रेजी भाषा की यह नई परीक्षा आयोजित की जाएगी।

गेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट

एंटानानारिवो। हिन्द महासागर में स्थित द्वीपीय राष्ट्र मेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट हो गया है। सशस्त्र बल यहां सत्ता संभाल रहे हैं। मेडागास्कर में एक विशिष्ट सैन्य इकाई के कर्नल ने यह जानकारी सार्वजनिक की। राष्ट्रपति राजोएलिना सैनिकों के विद्रोह के कारण देश छोड़कर भाग गए।

इसरो का लक्ष्य 2040 चांद पर उतरेंगे

रांची। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 2024 में भारतीयों को चन्द्रमा पर उतारने का लक्ष्य तय किया है। इसरो प्रमुख वी नारायणन ने कहा पहला मानवयुक्त चन्द्र मिशन 'गगनयान' 2027 की पहली तिमाही में लॉन्च हो सकता है।

फसक

दाज्यू, आरोप लगाना सबसे आसान काम ठैरा

फनफनाती दुनिया के युवाओं में बौयाट बहुत हो गया है बल

दाज्यू, दीपावली का मीठा तरबराट कर रहा है। हल्द्वानी के बनभूलपुरा में बताशे और खिलौने बनाने की फैक्ट्री घर पर चला रहे लोगों की आफत मच गई। जो-तो मिलाकर बताते बना रहे थे बल। जब साहब लोग पूछने पर आ जाएं तो पता ही ठैरा कितनी आफत मच जाती है। किच्छा में भी मिठाई की अवैध फैक्ट्री को बन्द करने का दावा किया जा रहा है। दाज्यू हमारी समझ नहीं आ रहा है मिठाई बनाने वाले कारखाने तो पहले से जगह जगह हैं, फिर ये किस तरह की फैक्ट्री खुलने लगी है। चूरन-चाट-मीठा मिलाकर कई तरह के आइटम बाजार में खूब बिक रहे हैं। खाने वाले भी घपाघप खा रहे हैं। किसको गलत कहें? गोपाल दा आरोप लगा रहा है कि सबकुछ मिलावट का सामान है। दिन भर ताश के पत्ते फेंटने वाला गोपाल दा अमेरिका से लेकर का कनाडा तक की राजनीति पर बहस करता है और आरोप भी लगाता रहता है। दाज्यू, आरोप लगाना सबसे आसान काम ठैरा। पूर्व मुख्यमंत्री हरदा ने राज्य सरकार पर बड़ा आरोप लगा दिया है कि युवाओं को रोजगार नहीं दिया जा रहा है लेकिन नशे को घर-घर पहुंचा दिया है। मंत्री सुबोध उनियाल ने हल्द्वानी भ्रमण के दौरान कहा- 'पूर्व सीएम हरीश रावत की उम्र हो गई है। उनकी वानप्रस्थ की उम्र है। हरदा अब घर बैठकर राम भजन करें।' दाज्यू, आरोप लगाने के अलावा मुफ्त की सलाह देना भी तो आसान काम ठैरा।

दाज्यू, हरदा हों या घनदा, भूपाल दा हों या धामी दा.....सबने धो-पोछकर युवाओं को मनाना है। वैसे भी फनफनाती दुनिया के युवाओं में बौयाट बहुत हो गया है बल। ऋषिकेश में छात्रसंघ चुनाव का बबाल अभी तक चल रहा है। चुनाव के दिन 26 सितम्बर की रात हुए विवाद में पुलिस ने एनएसयूआई महानगर अध्यक्ष सहित 22 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। काशीपुर में पूर्व पालिका अध्यक्ष शमशुद्दीन ने एक प्रापर्टी डीलर पर उनकी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा करने का आरोप लगाते हुए एसएसपी को पत्र सौंपा है। दाज्यू, जब पालिकाध्यक्ष जैसे लपेट में हैं तो आम जनता को कौन पूछने वाला है।

लपेटा-लपेट में कुछ भी हो सकता है क्योंकि सोचने-समझने की ताकत खतम होती जा रही है। बिहार विधान सभा चुनाव में भाजपा ने दरभंगा के अलीनगर से युवा गायक मैथिली ठाकुर को जिस दिन उम्मीदवार बनाया हमें उसी दिन से लग रहा है कि उत्तराखण्ड में भी झमाझम हो सकती है। खूब नाच गाना हो रहा है और बेहिसाब कलाकारी का दरिया बहने लगा है। दाज्यू, साब लोग गा रहे हैं और नेता-मंत्री थिरक रहे हों तो सीधा सा मतलब है चारों और सुख-शान्ति है। लपक-झपक तो लगी रहती है। डीडीहाट के विधायक विशन दा ठीक ही तो कह रहे हैं- ' जिसको विकास कार्य नहीं दिखते तो चश्मा लगा लो।' दाज्यू, चश्मा लगाना ही सबसे बेहतर उपाय लग रहा है।

बदरीकेदार मन्दिर समिति के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी के कामकाज को लेकर नाराज लोगों ने हंगामा मचा दिया बल। इसके बाद बीकेटीसी के पूर्व अध्यक्ष अजेन्द्र अयज ने भी बीकेटीसी के काम काम पर सवाल उठाए हैं। दाज्यू, मन्दिर की समितियों में भी घपलचू होती होगी अब समझ आ रहा है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

कब होगी सुनवाई.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

एवं विकास से सम्बन्धित बिन्दुओं पर चर्चा के लिये प्रतिभाग करें।

सीमान्त के सवालों को नत्थी करते हुए मल्ला जोहार विकास समिति हमेशा की तरह फिर से सवाल कर रही है। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने नाराजी व्यक्त करते हुए कहा है कि समस्याओं के निराकरण के लिये कभी भी शासन प्रशासन ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी नहीं समझा, जिस कारण सीमान्त क्षेत्र के लोगों को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। स्वास्थ्य, पेयजल, सड़क की समस्या, स्कूलों में शिक्षक व स्टाफ की कमी की समस्या जस की तस है। जिस प्रकार बालिका कन्या इण्टर कालेज नमजला की समस्या का अभी तक हल नहीं किया गया है, इस प्रकार से जो मोटर सडक हमेशा चाहे बरसात हो या बर्फबारी का सीजन या गर्मी का मौसम, यह दुरुस्त नहीं की जाती। दो-चार दिन हल्ला मचने के बाद फिर वही उदासीना। स्कूली बच्चे और क्षेत्रवासी दिक्कतों का सामना कर रहे हैं, इनकी कौन सुनने वाला है? शिक्षक विहीन स्कूलों में किस तरह की पढ़ाई हो रही होगी अनुमान लगाया जा सकता है। दुर्गम क्षेत्र के रहने वाले अपनी मेहनत व स्वरोजगार कर जैसे-तैसे भरण-पोषण व बच्चों को अच्छे संस्कार दे रहे हैं लेकिन बेरोजगारी व महंगाई का अत्याचार सबको झेलना पड़ रहा है।

श्री धर्मशक्तू ने हाल की कुछ घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा है कि अत्याचार जैसे मामलों पर कार्रवाई न होना दुर्भाग्य है। गुनाहगारों का खुलेआम घूमना और भाषणों मीटिंग में समय बर्बाद होना, नेताओं के जन्मदिन पर करोड़ों रुचये खर्च कर पोस्टर बैनर चस्पा करना आम जनता को मुंह चिढ़ाना ही है। शासन प्रशासन की आँखों के सामने सब कुछ हो रहा है तो कहीं तो कोई मिलीभगत होगी ही। आम जनता को उनके अधिकारों का लाभ मिलना चाहिये।

मल्ला जोहार विकास समिति जोर सबसे ज्यादा यातायात सुविधा को लेकर रहा है ताकि खाद्यान्न व अन्य आवश्यक सामग्री दूरस्थ क्षेत्रों में समय पर पहुँचे और स्वास्थ्य सुविधाओं को देखते हुए किसी प्रकार की परेशानी न हो। देखना अब यह है कि हरि प्रदर्शनी के दौरान समिति की आमसभा में उठने वाली समस्याओं पर अधिकारी क्या जवाब देते हैं। क्योंकि इस दौरान जोहार की शीत से बचकर आए परिवार हकीकत बयां करेंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हालात

हिन्दी विश्वविद्यालय में १८ पाठ्यक्रमों की सभी सीटें खाली

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

देश का इकलौता हिन्दी विश्वविद्यालय हिन्दी के पाठ्यक्रमों में ही स्टूडेंट की कमी से जूझ रहा है। हालत यह है कि अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्व विद्यालय के एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम में केवल 4 छात्रों ने प्रवेश लिया है. वहीं 18 पाठ्यक्रम तो ऐसे हैं, जिनमें एक भी प्रवेश नहीं हुआ। जबकि बीते 14 साल से संचालित हो रहे इस विश्वविद्यालय के संचालन में सरकार हर साल करोड़ों रुपये खर्च कर रही है।

हाल में ही 5 करोड़ रुपये से विश्वविद्यालय की नई बिल्डिंग का निर्माण भी किया गया। इसके बावजूद विवि प्रबन्धन स्टूडेंट को बुलाने में नाकाम रहा। शैक्षणिक वर्ष 2012-13 में अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय का पहला सत्र शुरू हुआ था। उस समय यहाँ करीब 60 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया था। तब राज्य सरकार की योजना इसे ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं के शिक्षण-प्रशिक्षण, प्रकाश-विस्तार तथा राष्ट्रीय लोक व्यवहार को हिन्दी भाषा में सम्भव तथा सम्पन्न बनाकर विश्व का पहला ऐसा विश्वविद्यालय बनाने की थी। जहाँ कला, समाज विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, विज्ञान, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधि, शिक्षा एवं अन्य आधुनिक दृष्टिकोण के पाठ्यक्रमों का संचालन हिन्दी भाषा के माध्यम से करना था। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय में नए शैक्षणिक सत्र में कुल 174 सीटों पर प्रवेश हुआ है। इनमें पीजी के 27 कोर्स में 63 और यूजी के 11 पाठ्यक्रमों में 99 स्टूडेंट ने प्रवेश लिया है। वहीं 13 सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्सेस में केवल 12 एडमिशन हुए हैं। सबसे खास बात यह है कि यह मध्य प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ सभी कोर्सेस का संचालन हिन्दी भाषा में ही किया जाता है। इसके बावजूद यहाँ हिन्दी के पाठ्यक्रमों में ही प्रवेश लेने वाले बच्चों की कमी है। इस सत्र में केवल 4 बच्चों ने प्रवेश लिया है। वहीं 11 पाठ्यक्रम ऐसे हैं, जहाँ केवल एक-एक स्टूडेंट ने एडमिशन लिया है। यूनिवर्सिटी में कम हो रहे प्रवेश को लेकर हिन्दी विश्व विद्यालय के कुलगुरु देव का कहना है इस मामले में समीक्षा की जा रही है। आगामी सत्र से विश्वविद्यालय में कुछ नए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। जिससे स्टूडेंट की संख्या बढ़ाई जा सके। इसके साथ ही इंजीनियरिंग का कोर्स भी हिन्दी में शुरू करने की तैयारी है। विश्वविद्यालय में इंफ्रास्टक्चर समेत अन्य सुविधाओं की कमी है, इसके लिए शासन से बजट मांगा गया है। हिन्दी विश्वविद्यालय में स्टूडेंट की संख्या बढ़ाने के लिए अन्य विकल्पों पर भी विचार किया जा रहा है अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय की शुरुआत को 14 साल बीत चुके हैं। शैक्षणिक वर्ष 2025-26 में 68 कोर्सेस में एडमिशन प्रक्रिया शुरू की गई थी। इसके बाद 18 पाठ्यक्रमों में एक भी स्टूडेंट ने प्रवेश नहीं लिया। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में करीब 500 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। वहीं साल 2012-13 से अब तक करीब 4,973 स्टूडेंट प्रवेश ले चुके हैं। शुरुआत में विश्वविद्यालय प्रबन्धन का उद्देश्य विज्ञान, साहित्य, वाणिज्य, कला, कानून समेत अन्य संकायों में हिन्दी भाषा में शोध आधारित पाठ्यक्रम शुरू करना था। लेकिन इन 14 सालों में यहाँ पीएचडी भी शुरू नहीं हो सकी। हालांकि राज्य सरकार से हर साल 3.5 करोड़ रुपये की ग्रांट दी जा रही है। जिससे स्टाफ के वेतन व अन्य खर्चे निकल रहे हैं।

बता दें कि साल 2023 में 13 नियमित शिक्षकों की भर्ती हुई है, जिनका वेतन करीब एक लाख रुपये तक है। इनके साथ ही 22 अतिथि विद्वान पदस्थ हैं, जिन्हें प्रत्येक को करीब 33 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय का भुगतान किया जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्व विद्यालय की स्थापना 2011 में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी, लेकिन हिन्दी में ही विद्यार्थियों की संख्या कम है। सत्र 2025-26 में एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम में सिर्फ चार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। वहीं पीजी के नौ, यूजी के दो और सर्टिफिकेट व डिप्लोमा के सात पाठ्यक्रम में शून्य प्रवेश हुए हैं। हालांकि, विवि में सुविधाओं के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च हुए हैं। शिक्षकों के वेतन पर भी लाखों रुपये खर्च हो रहे हैं। जिन पीजी पाठ्यक्रम में शून्य प्रवेश हुए उनमें अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, एमएससी गणित, एमएससी पर्यावरण, एमकॉम, एमबीए, गाइडेंस एवं काउंसलिंग में एक भी विद्यार्थी ने प्रवेश नहीं लिया है। जबकि यूजी पाठ्यक्रम में बीए योग और बीएससी आधारभूत विज्ञान, सार्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स में पंचकर्म, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, मत्स्य एवं मात्स्यिकी, नाट्य शास्त्र एवं रंगमंच, लोक संगीत, डीसीए और पीजीडीसीए में किसी भी विद्यार्थी ने एडमिशन नहीं लिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत हम आने वाले सत्र से नए रोजगारोन्मुखी कोर्स शुरू करने जा रहे हैं। विशेष रूप से इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को हिन्दी माध्यम में शुरू करने की योजना है। इसके अलावा अधूरे छात्रावास और बस सुविधा को पूरा करने के लिए शासन को पत्र लिखकर अतिरिक्त बजट मांगा गया है। हमें उम्मीद है कि इससे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ेगी। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले कुछ विद्यार्थियों का कहना है कि यहाँ बुनियादी सुविधाएं तो हैं लेकिन करियर गाइडेंस और रोजगार की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की जाती। एमए हिन्दी की एक छात्रा ने कहा, हिन्दी में पढ़ाई करना चाहती थी, लेकिन यहाँ क्लासेस नियमित नहीं होती। सेमिनार, वर्कशाप और करियर काउंसलिंग का अभाव है। ऐसे में विद्यार्थी खुद ही आगे बढ़ने का रास्ता ढूंढते हैं। विश्व विद्यालय प्रशासन ने बताया कि प्रवेश प्रक्रिया में देशभर के विद्यार्थियों को शामिल करने के लिए आनलाइन आवेदन व्यवस्था की गई थी, लेकिन परिणाम निराशाजनक रहे। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, और छत्तीसगढ़ जैसे हिन्दीभाषी राज्यों से भी विद्यार्थी नहीं आए। इससे यह सवाल उठता है कि क्या विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा घट रही है या फिर विद्यार्थियों में हिन्दी माध्यम की उच्चशिक्षा के प्रति विश्वास कम हो रहा है?

ज्योतिष की बातें- 252

27 अक्टूबर 2025 को मंगल स्वराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा जहाँ पर गुरु की शुभदृष्टि भी रहेगी अत: मंगल अत्यन्त शुभ रहेगा। फलदीपिका के अनुसार मंगल तीसरे, छठवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है तथा कर्क और सिंह राशियों के लिए योगकारक भी होता है। अत: अगले 42 दन मंगल अपने कारक विषयों स्वास्थ्य, पराक्रम, युद्ध, खेलकूद आदि में मकर, कन्या, सिंह, कर्क व मिथुन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। शेष राशियों को भी मंगल सामान्य फल प्रदान करता रहेगा।

2 नवम्बर 2025 को शुक्र स्वराशि तुला में प्रवेश करेगा अत: शुक्र अत्यन्त बली रहेगी। अगले 28 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में मेष के अतिरिक्त सभी राशियों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

देवोत्थानी एकादशी- कार्तिक शुक्लपक्ष में द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण एकादशी का व्रत शनिवार 1 नवम्बर 2025 को ही रहेगा। पारणा के दिन अर्थात अगले दिन रविवार को तुलसी विवाह के उत्सव के साथ ही अभी तक स्थगित चल रहे विवाह आदि संस्कार तथा गृहप्रवेश आदि शुभकार्य प्रारम्भ हो जाएगंे।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 142

स्वदेशी की भावना

अपने देश में देशभक्ति की भवना के कारण समय-समय पर जनता में स्वदेशी का ज्वार पैदा होता रहता है। वर्तमान में भारत विश्व के 190 देश को निर्यात करता है और 140 देशों से आयात करता है। निर्यात करने वाली वस्तुओं की संख्या लगभग 7500 हजार और आयात करने वाली वस्तुओं की संख्या 6000 है। भारत जिन देशों को वस्तुओं का निर्यात करता है उनमें प्रमुख देशों के नाम संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, नीदरलैंड, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, सिंगापुर, हांगकांग, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया। इन देशों के अलावा भारत अन्य कई देशों को भी वस्तुओं का निर्यात करता है जैसे- ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, इटली, जापान, मलेशिया, रूस, सऊदी अरब और दक्षिण अफ्रीका आदि। भारतीय जिन प्रमुख वस्तुओं का निर्यात करता है, वे वस्तुएं हैं- इलेक्ट्रॉनिक सामान, औषधियाँ, वस्त्र, पेट्रोलियम अत्पाद, सोना, ज्वेलरी, मशीनरी, वाहन इत्यादि। किसी भी देश के लिए जिन वस्तुओं का स्थानीय स्तर पर उत्पादन महंगा होता है, उन वस्तुओं का आयात करना पड़ता है। और जिन वस्तुओं का उत्पादन सस्ता होता है, उन वस्तुओं का विदेश को निर्यात करना पड़ता है। यही व्यापार है।

दुनिया के अन्य देशों में भी यदि भारत की तरह स्वदेशी की भावना जागृत हो जाए और वे 190 देश भारत से कुछ भी सामान मंगाना बन्द कर दें तो एक बार सोचिए कि भारत की स्थिति क्या होगी। व्यापारियों में हाहाकार मच जाएगा। हाँ, इतना अवश्य है कि भारत को व्यापार में सन्तुलन बनाए रखना चाहिए। निर्यात की मात्रा आयात से अधिक होनी चाहिए। तभी देश की उन्नति होती है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

चम्पावत : चाय बागान से बढ़ा पर्यटन और रोजगार

डॉ. मनीषा पाण्डेय तिवारी

ऐतिहासिक महत्व का चम्पावत जिला समुद्रतल से 1670 मीटर की ऊँचाई पर बसा है। उत्तराखण्ड का यह जिला 15 सितम्बर 1997 में नए जनपद के रूप में गठित हुआ था। ऐतिहासिक एवं धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र रहा चम्पावत सुन्दर पर्यटक नगरी के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहा है। नया जिला बनने के बाद चम्पावत विकास की दौड़ में शामिल है। पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा देने के अलावा चाय बागान की अद्वितीय सुन्दरता पर्यटकों को मोह रही है। पर्यटन के साथ इन चाय बागानों से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिला है।

चाय का यह बागान जिला मुख्यालय से चार किमी दूर सिलिंगटाक में 21 हेक्टेयर में फैला है। इस चाय बागान के बीच ईको हट में पर्यटकों के रात्रि विश्राम की भी सुविधा है। एक करोड़ से ज्यादा की लागत से चार हेक्टेयर में टी-टूरिज्म विकसित किया गया है। यहाँ बने व्यू प्वाइंट से पर्यटक इस जैविक टी-गार्डन के साथ-साथ चन्द शाकों की राजधानी चम्पावत नगरी के शीर्ष से सुन्दर हरे-भरे पहाड़, हिमालय की चोटियों का मनोहारी दृश्य और सूर्यास्त का नजारा भी देख सकते हैं। 241 हेक्टेयर में फैले इस टी गार्डन से 60 हजार किलो की चायपत्ती का उत्पादन होता है। जिससे वर्ष में लगभग दस टन चाय तैयार होती है और इसका निर्यात देश-विदेशों में होता है।

चम्पावत पर्यटकों का केन्द्र तो हमेशा से ही रहा हे किन्तु इस टी-गार्डन ने पर्यटन को और अधिक बढ़ावा दिया है। यहाँ घूमने आने वाले पर्यटक अब चम्पावत के टी-गार्डन में घूमने अवश्य आते हैं। अप्रैल-मई-जून माह में तो यहाँ प्रतिदिन सौ से भी अधिक लोग घूमने आते हैं। चाय बागान का रखरखाव भी बहुत अच्छे ढंग से किया जाता है। यहाँ प्रवेश करने पर 12 से अधिक उम्र वाले पर्यटकों को 20 रुपए शुल्क देना पड़ता है। यहाँ कार्य करने वाले स्थानीय युवाओं के लिए भी रोजगार का मार्ग खुल गया है। आज भी उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में ऐसे अनेक स्थल हैं यहाँ इस तरह के जैविक चाय बागानों की खेती की जा सकती है जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार के साथ-साथ पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। प्रतिदिन प्रगति करता चम्पावत जिला पर्यटन और रोजगार के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

द्रोणा सागर लिंग मार्ग कार्य शुरू

काशीपुर। ऐतिहासिक द्रोणा सागर को जोड़ने वाला लम्बे समय से क्षतिग्रस्त मार्ग का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। 17.52 लाख रुपये की लागत से सीसी मार्ग बनने के बाद श्रद्धालुओं को आने जाने में सुविधा होग और वार्ड नं. 33 कॉलोनी वासियों को लाभ होगा।

खेतीखान में दीप महोत्सव

लोहाघाट। खेतीखान का प्रसिद्ध दीप महोत्सव सम्पन्न हो गया है। आकर्षक झांकियों के साथ्थ शुरू हुए आयोजन में रंगारंग मंचीय प्रस्तुतियां देखने को मिली। पूर्व विधायक पूरन सिंह फर्त्याल ने कहा कि यह अयोजन अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। समिति के अध्यक्ष विजय सिंह बोहरा की अध्यक्षता व दीवाकर भट्ट के संचालन में कार्यक्रम हुए।

बेरीनाग कालेज की स्वर्ण जयन्ती

बेरीनाग। राजकीय स्नातकोत्तर महा विद्यालय बेरीनाग की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। प्राचार्य प्रो. बी.एम.पाण्डे की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा उपनिदेशक प्रो.आर.एस.भाकुनी व विशिष्ट अतिथि गणाई गंगोली कालेज के प्राचार्य प्रो.सिद्धेश्वर कुमार सिंह थे। इस अवसर पर विभागीय गतिविधियों के लिये पुरस्कार वितरित किये गये।

पर्यटन से जुड़ेगा छोटा कैलास

नैनीताल। विख्यात आदि छोटा कैलास धार्मिक स्थल के साथ पर्यटन से जुड़ेगा। इसके लिये विभाग की ओर से तैयारियां की जा रही हैं। यात्रियों की बढ़ती संख्या देखते हुए पर्यटन विभाग अब मन्दिर का सौन्दर्यीकरण करने जा रहा है। भीमताल ब्लाक के ग्राम पंचायत पिनरो स्थित छोटा कैलास में महाशिवरात्रि और सावन पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

जोहार महोत्सव की तैयारियां

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा तीन दिवसीय जोहार महोत्सव की तैयारी तेज हो गई है। पिछले 15 वर्षों से प्रतिवर्ष नवम्बर माह के दूसरे सप्ताह के दौरान हल्द्वानी में यह आयोजन किया जाता है। सोसाइटी के श्री डी.एस.पांगती कहते हैं कि महोत्सव का मुख्य उद्देश्य अपनी संस्कृति, सांस्कृतिक परम्परा, लोक संगीत आदि का संरक्षण एवं संवर्धन करना है ताकि विलुप्त हो रही सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा नयी पीढ़ी को जोड़ कर उन्हें संजोने में सभी सहभागी बन सकें। इस महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी किये जाते हैं। पहाड़ी उत्पादों, हस्तशिल्प, खानपान, बुक स्टाल का भी प्रदर्शन इसमें होता है। सोसाइटी ने बैठक करते हुए सभी से जोहार महोत्सव को भव्य बनाने के लिये सहयोगी बनने की अपील की है।

पद पाने के लिये उक्रांद को मत रौंदो, पहाड़ की बात कौन करेगा?

आठ ने की थी दावेदारी

तीन माह के लिये चुनाव टाला गया

रामनगर/नैनीताल। उत्तराखण्ड क्रान्ति दल का 22वां द्विवार्षिक महाविधवेशन पीरुमदारा में जिस जोश के साथ शुरू हुआ था, उतने ही ज्यादा हंगामे के साथ इसमें विवाद हुआ। दल के केन्द्रीय अध्यक्ष को लेकर 8 ने दावेदारी की लेकिन अध्यक्ष चुनने वाले डेलीगेट्स को लेकर मचे घमासान के बाद तीन माह के लिये चुनाव टाल दिया गया। मचे हंगामे से पहाड़ के आम लोगों में भी रोष है और उनका कहना है कि पद पाने के लिये उक्रांद को मत रौंदो। पहाड़ की समस्यायाओं को लेकर जन्मा उत्तराखण्ड क्रान्ति दल भले ही सत्ता में न हो लेकिन इससे हमेशा उम्मीद रहती है। यदि इसमें पदों की लड़ाई होती रही तो पहाड़ की बात कौन करेगा? साथ ही पहाड़ी अवधारणा को समझने वाली पार्टी कमजोर होगी।

उल्लेखनीय है कि उक्रान्द के द्विवार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन प्रदेशभर के 300 से अधिक पदाधिकारी उपस्थित थे और आठ कार्यकर्ताओं ने अध्यक्ष पद के लिये दावेदारी की। काफी देर तक मंथन के बाद भी किसी नाम पर सहमति नहीं होता देख चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। ऐसे में कुछ कार्यकर्ताओं ने तुरन्त और कुछ ने तीन माह बाद चुनाव कराने की बात कही। कार्यकर्ताओं की यह बहस हंगामे में बदल गई। वोटिंग कराने के लिये भारी विरोध के बीच तन माह के लिये चुनाव टाल दिया गया।

नामांकन कराने वालों में पूरन सिंह कठैत, शान्ति भट्ट, पंकज व्यास, कुन्दन बिष्ट, जयप्रकाश उपाध्याय, राजेन्द्र सिंह बिष्ट, ए.के.जुयाल, सुरेन्द्र कुकरेती थे। इसके बाद चुनाव अधिकारी समीर मुदेपी के सहित अन्य ने प्रयास किया कि सहमति से निर्णय हो जाए परन्तु ऐसा नहीं हो सका। अध्यक्ष बनाने के लिये बनाए गए डेलीगेट्स को लकर तमाम कार्यकर्ताओं ने आपत्ति जताई। आरोप लगाया कि ऐसे डेलीगेट्स बना दिए गए हैं जिन्हें सदस्यता लिए एक-दो माह ही हुए हैं जबकि कम से कम एक वर्ष होना चाहिये।

धारचूला में आक्रोशित भीड़ का प्रदर्शन, युवक की मौत से पर्दा उठाने की मांग

धारचूला। स्थानीय युवक की एक माह पूर्व बरेली में हुई मौत से पर्दा न उठने पर धारचूला में जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ। इस बीच आरेपी के भाई ने दुकान पर तोड़फोड़ का आरोप भी लगाया।

शिल्पकार संगठन के आह्वान पर बड़ी संख्या में एकत्रित लोगों ने तहसील मुख्यालय में जुलूस निकालने के अलावा सभा की। संगठन के अध्यक्ष जितेन्द्र वर्मा, गौरव सेनानी संगठन के अध्यक्ष पूर्व कैप्टन भूपाल सिंह रावल, व्यापार मण्डल अध्यक्ष भूपेन्द्र थापा, अनवाल समुदाय के अध्यक्ष नरेन्द्र बिष्ट, रं महिला फोरम की निहारिका गर्ब्याल, रं कल्याण संस्था के पूर्व अध्यक्ष कृष्णा गर्ब्याल, पूर्व ब्लाक प्रमुख राधा बिष्ट सहित बड़ी संख्या में प्रदर्शन के लिये जुटे लोगों ने कहा कि धारचूला निवासी सुशील कुमार को दो लोग 14 सितम्बर 2025 को निजी कार्य के लिए बरेली लेकर गए। अगले दिन व्यापारी तो धारचूला लौट आया लेकिन सुशील साथ में नहीं था। उसी दिन सुशील का शव पुलिस ने बरामद कर लिया। परिजनों ने हत्या की आशंका जताते हुए अंसार खान और बबलू खान के खिलाफ तहरीर दी। मामले में बरेली पुलिस ने अभी तक आरोपियों को नहीं पकड़ सका है। नाराज लोगों ने मामले का खुलासा न होने पर अन्तर्राष्ट्रीय झूलापुल में तालाबन्दी की चेतावनी दी है।

पटवाडांगर में तीसरे कैम्पस का विस्तार

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के तीसरे कैम्पस पटवाडांगर में विस्तार का कदम बढ़ा है। प्रदेश सरकार ने विवि को पटवाडांगर में 26.4 एकड़ भूमि हस्तान्तरित कर दी है। राजस्व बन्दोबस्ती की सभी कार्रवाई पूर्ण हो चुी है और राज्य के राजस्व रिकार्ड में कुविवि नैनीताल के नाम दर्ज हो चुकी है। कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने बताया कि तीसरे कैम्पस की स्थापना जल्द शुरू होने वाली है। मेरू योजना के तहत इस कैम्पस में विभागों को स्थापित किया जाएगा। इस नए कैम्पस में प्रारम्भिक स्तर पर चार प्रमुख विभाग खोलने की योजना है। इसमें हिमालयी औषधीय पौधों में उत्कृष्टता केन्द्र (सेन्टर फॉर एक्सीलेंस इन हिमालयन मेडिसिनल प्लांट्स), जो क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देगा। बायोमेडिकल सांइस संकाय और नैनो टेक्नोलॉजी विभाग भी इसमें होंगे।

युवा सक्रिय भागीदारी निभाएं : कोठियाल

श्रीनगर। हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग की ओर से हिमालयी क्षेत्र में ऐरोसोल, वायु गुणवत्ता एवं जलवायु परिर्वन पर तृतीय बहुविषयक अन्तर्राट्रीय संगोष्ठी पर गढ़वाल विवि चौरास परिसर स्थित स्वामी मन्मथन प्रेक्षागृह में शुभारम्भ करते हुए उत्तराखण्ड राज्य पूर्व सैनिक कल्याण परामर्श समिति के अध्यक्ष एवं यूथ फाउंडेशन उत्तराखड के संस्थापक कर्नल(सेनि.) अजय कोठियाल ने कहा कि युवाओं को पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के निवारण एवं हिमालय की जैव विविधता के संरक्षण के लिए सक्रिय भागीदारी निभाएं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर करते हुए गढ़वाल विवि कुलपति के प्रतिनिधि प्रो. एन.एस.पंवार ने कहा कि रष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान पर विशेष बल देती है और आईएमसीएएसी जैसे आयोजन इस नीति को साकार करती है।

बरेली-हल्द्वानी के बीच रेल लाइन सर्वे

हल्द्वानी। कुमाऊं और रुहेलखण्ड के बीच रेल सम्पर्क को और मजबूत करने की दिशा में रेललवे ने बड़ा कदम बढ़ाया है। इज्जतनगर मण्डल अब बरेली हल्द्वानी नई रेल लाइन के लिये ट्रैफिक सर्वे कराने जा रहा है। यह सर्वे नई लाइन की सम्भावनाओं, यात्रियों की संख्या, माल यातायात और भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर रेल सम्पर्क की व्यवहारिकता को तय करेगा।

बताया जा रहा है कि नई रेल लाइन को बिछझने के लिये डीपीआर तैयार की जा रही है। रिपोर्ट तैयार होने के बाद रेलवे बोर्ड से स्वीकृति के लिये भेजी जाएगी। डीपीआर में तकनीकी, वित्तीय और पर्यावरणीय पहलुओं का पूरा विवरण शामिल किया जाएगा। इस दिशा में प्रारम्भिक कार्य शुरू कर दिया गया है। इसके साथ ही हल्द्वानी-रीठा साहिब रेल परियोजना के लिये 5 लाख रुपये जबकि रामनगर-चौखुटिया नई रेल लाइन सर्वे के लिये 35 लाख रुपये बजट आवंटित किया गया है। इस परियोजना से पर्यटन और व्यापार में बढ़ोत्तरी होगी।

बनबसा में बनेगी एकीकृत जांच चौकी

केन्द्र सरकार ने चम्पावत जिले के बनबसा क्षेत्र में एकीकृत जांच चौकी (इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट) के निर्माण के लिये वन भूमि विचलन की अन्तिम स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस परियोजना के लिये कुल 34.00 हैक्टेयर आरक्षित वन भूमि को बंदरगाह प्राधिकरण, भारत के पक्ष में विचलित किया गया है। यह भूमि तराई पूर्वी वन प्रभाग हल्द्वानी के अन्तर्गत चैनी कम्पार्टमेंट-14 बनबसा, पूर्णागिरी तहसील टनकपुर में में स्थित है।

डीडीए समाप्त करने की मांग

अल्मोड़ा। जिला विकास प्राधिकरण के विरोध में लम्बे समय से सर्वदलीय संघर्ष समिति का धरना प्रदर्शन जारी है। समिति ने शासन प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए पर्वतीय क्षेत्रों से डीडीए समाप्त करने की मांग उठाई है। गांधी पार्क में आयोजित धरने में वक्ताओं ने कहा कि पिछले 8 साल से भी अधिक समय से यह प्रदर्शन हो रहा है।

परिक्रमा

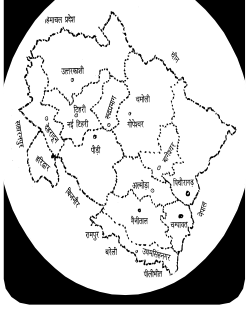

सीमान्त क्षेत्र विकास परिषद गठित होगी

रुद्रप्रयाग। गुप्तकाशी में प्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की ओर से चतुर्थ सीमान्त पर्वतीय जनपद बाल विज्ञान महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सीमान्त क्षेत्र की सुविधाओं व सेवाओं के विस्तार के लिए सीमान्त विकास परिषद गठित होगी। इसके अलावा सीमान्त जिलों में आपदा प्रबन्धन, स्वास्थ्य व शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए नवाचार केन्द्र बनाए जाएंगे।

एआइ प्रयोगशाला स्थापित

देहरादून। राज्य के चार राजकीय पालिटेक्निक संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) प्रयोगशाला स्थापित हो गई हैं। रा.पालिटेक्निक पित्थूवाला, रानीपोखरी देहरादून, काशीपुर (उसिंन) और द्वाराहाट (अल्मोड़ा) में इसे शुरू किया गया है। इन आधुनिक प्रयोगशालाओं के माध्यम से छात्र अब पारम्परिक विषयों को आधुनिक तकनीकी दृष्टिकोण से पढ़ पा रहे हैं, जिससे उनके ज्ञान और कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संसार, शरीर और....

प्रथम पृष्ठ का शेष

पढ़ें जो जो हम नचिकेता के विवरण के साथ कुछ सवालों के रूप में छोड़कर आए थे। अष्टावक्र शरीर की व्यर्थता बता रहे हैं तो नचिकेता मृत्यु पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। अगर मृत्यु को जीतना ही लक्ष्य नहीं है तो फिर भला क्या मतलब रह रह जाता है नचिकेता की कहानी का? नचिकेता की पूरी कहानी बता देने के बाद हमारे सवाल थे- क्या कोई यमराज के महल जा सकता है? उसके महल के बाहर तीन दिन तक भूखा-प्यासा बैठा रह सकता है? यम से किसी का सम्वाद हो सकता है क्या? इन सभी सवालों का कोई तर्कपूर्ण उत्तर देना आसान नहीं है और आप कोई तर्कपूर्ण जवाब इन सवालों का हो सकता है तो वह नकारात्मक ही हो सकता है। यानी न तो कोई यमराज के महल के दरवाजे तक जा सकता है, न ही उससे कोई सम्वाद कर सकता है, वहाँ भूखा प्यासा बैठा रहने की बात ही कल्पनातीत है। फिर क्यों नचिकेता जैसे परमदार्शनिक के साथ ऐसे बेहूदा या असम्भव कहे जा सकने वाले प्रसंग जोड़ दिए गए? क्यों पीढ़ी दर पीढ़ी हर दार्शनिक इन कथाओं को अपने प्रवचनों और विचारों के साथ पिरोता चला गया? कोई तो अर्थ होगा? मतलब होगा? है, यकीनन है।

एक तरफ नचिकेता है जो मृत्यु को जीतने के लिए ठीक उसके दरवाजे पर जा पहुँचते है। मृत्यु को जीतना है तो उसके आने का इन्तजार आप नहीं कर सकते। आपको अपने ही प्रयासों से उस पर हावी होकर उसे निस्तेज करना होगा, उसे जीतना होगा। नचिकेता ने मृत्यु के आने की प्रतीक्षा नहीं की, उसी के घर जाकर उसे जीता। और जो तीरा वर नचिकेता ने आत्मज्ञान के रूप में पाया, उसका अर्थ यही है कि आत्मा को जानना है, उस परमसत्य को पहचानना है तो पहले मृत्यु पर विजय प्राप्त करो, यानी उसे महत्वहीन मानो।

उन दो परमदार्शनिकों के साथ एक और परमदार्शनिक खड़ी है सुवर्चला जिसने श्वेतकेतु से विवाह ही इसी शर्त पर किया था कि इस युवा विचारक साबित कर दिया कि वह आँखों वाला भी है और अन्धा भी है। वह अन्धा है क्योंकि अपनी सामान्य आँखों से वह संसार को नहीं देखता, बल्कि अपनी विशिष्ट आँखों से, अपने ज्ञानचक्षुओं से वह संसार से परे के सत्य को देखता है इसलिए आँखों वाला भी है।

सुवर्चला संसार को मिथ्या बता रही है। अष्टावक्र शरीर को मिथ्या बता रहे हैं। नचिकेता मृत्यु को मिथ्या बना रहे हैं। तीनों एक बात कर रहे हैं और संसार, शरीर और मृत्यु को जीतकर आत्मतत्व को पहचानने की बात कर रहे हैं। महाभारत से पहले लिखे गए वैदिक मंत्रों में दर्शन कम है, देवताओं के विभिन्न रूपों की स्तुतियाँ ज्यादा हैं। पर वहाँ जितना भी दर्शन है उसके केन्द्र में सृष्टि और सृष्टिकर्ता का विवेचन ही ज्यादा है।

नासदीय सूक्त में परमेष्ठी के सामने एक ही समस्या है- जब यह संसार नहीं था, तब क्या था। हिरण्यगर्भ सूक्त में ऋषि उस परमतत्व की तलाश में है जिसके स्वर्णिम गर्भ से इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई। पुरुष सूक्त में उस विराट पुरुष का विवेचन है जिससे समस्त प्रजा उत्पन्न हुई। दीर्घतमा नामक महान दार्शनिक कवि सभी देवरूपों में निहित एक परमतत्व को खोज रहा है- एकं सद विप्रा बहुधा वदन्ति।

एकसा नहीं कि महाभारत से पहले आत्मतत्व का विचार इस देश से नदारत था। बाज रूप में था जिसके कई बीज तो महाभारत के बाद के दार्शनिकों ने पुष्पित-पल्लवित किए। पर महाभारत से पहले, यानी वैदिक मंत्रों का मुख्य विषय दर्शन नहीं है और जितना दर्शन वहाँ है, उसका भी केन्द्र बिन्दु आत्मतत्व वैसे नहीं है जैसे महाभारत युद्ध के बाद विचारकों के बीच है।

देश के दार्शनिक विकास की यात्रा में महाभारत का युद्ध एक अतिमहत्वपूर्ण पड़ाव है जिसने हमारे विचारों की शक्ल पर एक निर्णायक प्रभाव डाला है और जिसकी ओर हम तब संकेत कर आए है। जब हम उद्दालक आरूणि पर लिख रहे थे। महाभारत के भीष्मपर्व के अठारह अध्यायों वाली गीता है जिसमें कर्म, ज्ञान और भक्ति का विशद विवरण है और उसके ज्ञान विवेचन में इस संसार को मिथ्या मानने और आत्मतत्व को परमसत्य मानने के प्रभूत संकेत हैं। पर लगता है कि महाभारत युद्ध में हुए भयानक विनाश ने हमारे देश के दार्शनिकों की विचार धारा ही बदल दी। युद्ध के सिर्फ अठारह दिनों में हुए लाखों के नरमेघ ने हमारे विचारकों को शरीर की नश्वरता, संसार की क्षणभंगुरता और मृत्यु को पराजित करने के बारे में काफी गहरी सम्वेदना के साथ सोचने को विवश किया। इतना भयानक महायुद्ध हुआ हो जिससे सारे भारत के कोने-कोने से आए राजाओं और सैनिकों ने हिस्सा लिया हो और उन महाविनाश का असर हमारे देश और समाज पर न पड़ा हो, ऐसा सम्भव है क्या?

यकीनन हमारे राजनीतिक तन्त्र, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक दशा पर जैसे इस महाविनाश ने भारी असर डाला होगा, वैसे ही हमारे विचार तन्तुओं पर भी इसका भरपूर असर पड़ा। युद्ध कुरुपंचाल प्रदेश में हुआ, कुरुक्षेत्र के पास। महाविनाश वहीं हुआ। लाखों, बीस लाख से अधिक शव वहीं गिरे। अकूत सम्पदाहानि वहीं हुई। भयानक चीखें वहीं सुनी गई। महा योद्धाओं के दम्भ वहीं टूटे। इसलिए स्वाभाविक ही है कि शरीर और संसार की नश्वरता के बारे में मृत्यु को जीतने की सोच के बारे में सम्वाद यही कुरुपांचाल में हुआ, संगोष्ठियाँ यही हुई, वाद-विवाद यहीं हुए और दर्शन को नई दिशा देने वाले याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, उद्दालक, श्वेलकेतु, सुवर्च्छला, नचिकेता जैसे महा दर्शनिक भी यहीं हुए।

(साभार नवभारत टाइम्स)

दीपावली एवं हरिप्रदर्शनी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

रामा एग्रो इंडस्ट्रीज

झनकट खटीमा

(उ.सि.न.)

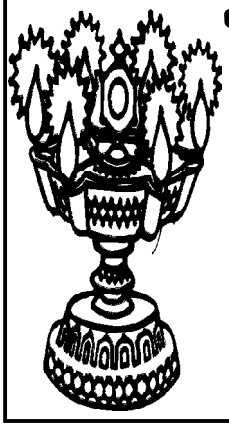

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari

A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट सम्पर्क

नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर

मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी

(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

मो.न. 8958525979, 9411134775

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दीपावली एवं हरिप्रदर्शनी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

दुर्गा सिंह बोथियाल
श्रीमती आनन्दी देवी

मधुवन इंक्लेव फेस-2,
गैस गोदाम रोड, हल्द्वानी

तेजप्रताप सिंह बोथियाल
श्रीमती पिनल नेगी बोथियाल
कु. नन्दा, मा. शिव
आबूधाबी

पूरन सिंह बोथियाल
श्रीमती मंजू देवी बोथियाल
मा. विराज सिंह, कु. जानवी
नोएडा

मनीष सिंह बोथियाल
श्रीमती इन्दिरा चौहान बोथियाल
मा. शौर्य सिंह
चैन्नई

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

दीपावली
एवं
हरिप्रदर्शनी
की

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

ईश्वर सिंह
वृजवाल

1090
इन्दिरा नगर
देहरादून

दीपावली
एवं
हरिप्रदर्शनी
की

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

भूपेन्द्र सिंह
जंगपांगी

इन्द्रानगर कालोनी
सीमाद्वार
देहरादून

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)